DR.MALA KUMARI
ASSISTANT PROFESSOR (GUEST TEACHER)
DEPARTMENT OF PSYCHOLOGY
A.N.D COLLEGE SHAHPUR PATORY,SAMASTIPUR

B.A –PART 2 PSYCHOLOGY (HONS)
PAPER-3 ,UNIT-7,
MEANING AND TYPES OF MOOD DISORDER
LECTURE-69

मनोदशा विकृति का अर्थ एवं प्रकार

MANINEG AND TYPES OF MOOD DISORDER

मनोदशा विकृति एक ऐसी मानसिक विकृति है जिसमें व्यक्ति के भाव (FEELING),संवेग (EMOTION)एवं संबंधित मानसिक दशाओं में इतना उतार –चढ़ाव होता है कि वह अपने दिन –प्रतिदिन के जीवन में सामायोजन का सामान्य स्तर बना कर नही रख पाता है और उसकी सामाजिक एवं पेशेवर जिंदगी में तरह –तरह की समस्याएँ उत्पन्न हो जाती है |इस तरह की

मानसिक विकृति में व्यक्ति की मनोदशा में काफी विषाद देखा जाता है तो कभी विषाद एवं सुखाभास दोनों ही बारी –बारी से होते देखा जाता है |चाहे मानसिक अवस्था बिषाद का हो या सुखाभास का ,रोगी का समायोजन बुरी तरह प्रभावित हो जाता है और व्यक्ति को चिकित्सा देना अनिर्वाय हो जाता है |

इंडियन एकेडमी ऑफ क्लिनिकल साइकेट्री (INDIAN ACADEMY OF CLINICAL PSYCHIATRY)के एक नवीनतम अध्ययन जिसे 2000 में प्रकाशित किया गया ,के अनुसार भारत के सामान्य जनसंख्या का करीब 5%यानि की लगभग 5 करोड़ भारतीयों में मनोदशा विकृति का रोग पाया जाता है |

DSM-IV (TR) में तीन तरह के मनोदशा विकृति का उल्लेख किया गया है जो निम्नांकित है –

(1)**विषादी विकृति (DEPRESSIVE DISORDER)**-इसे एक ध्रुवीय विकृति (UNIPOLAR DISORDER) भी कहा जाता है और इसका मुख्य लक्षण व्यक्ति में उदासी एवं विषाद का होना है |इसके अतिरिक्त इसमें भूख ,नींद एवं शारीरिक वजन में कमी होते

पायी जाती है और व्यक्ति का संक्रियण स्तर काफी कम जाता है |विषादी विकृति को दो भागो में बाँटा गया है –

(I)**डायस्थाइमिक विकृति (DYSTHYMIC DISORDER)**-इस विकृति में विषादी मनोदशा का स्वरूप चिरकालिक होता है अर्थात गत कई वर्षो से व्यक्ति की मनोदशा विषादी होती है |व्यक्ति को गत कई वर्षो से किसी भी चीज में अभिरुचि या आनन्द की कमी का अनुभव करता है |बिच में कुछ दिनों के लिये उसकी मनोदशा भले ही सामान्य हो जाता दीखते है परन्तु विषादी मनोदशा की प्रबलता सतत बनी रहती है |

(II) **बड़ा विषादी विकृति (MAJOR DEPRESSIVE DISORDER)**इस विकृति में व्यक्ति एक या एक से अधिक बड़े विषादी घटनाओं का अनुभव किया होता है |व्यक्ति प्रत्येक चीज में अपनी अभिरुची खो चूका होता है तथा उसे कोई कार्य में मन नही लगता है| ऐसे व्यक्तियों में नींद की कमी ,शारीरिक वजन में कमी ,थकान ,स्पष्ट रूप से सोचने की क्षमता में कमी ,बेकार एवं अयोग्य होने का भाव ,आत्म –हत्या की प्रवृति आदि अधिक होती है |इस विकृति में श्रेणीकृत होने के लिए यह

आवश्यक है कि ऐसे लक्षण कम – से – कम गत दो सप्ताह से अवश्य हो रहे हों |

TO BE CONTINUED